2026

MPPSC

MADHYA PRADESH

STATE FOREST SERVICE

प्राचीन भारत का इतिहास

Module - 1

भारत का इतिहास : संकल्पना एवं विचार – ◈ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, ◈ भारतवर्ष, वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, षड्दर्शन, स्मृतियाँ, ऋत सभा समिति, गणतंत्र, वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, ऋण संस्कार, पंचमहायज्ञ/यज्ञ, कर्म का सिद्धांत, बोधिसत्व, तीर्थंकर ◈ प्राचीन भारत के इतिहास की प्रमुख विशेषतायें, घटनायें एवं उनकी प्रशासनिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्थायें। ◈ **मध्यप्रदेश का इतिहास** : मध्यप्रदेश का प्राचीन इतिहास – प्रागैतिहासिक काल, आद्य ऐतिहासिक काल, ऐतिहासिक काल।

Hornbill Classes

MPPSC STATE FOREST SERVICE 2023

Rank – 1
Shashank Jain
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Jyoti Thakur
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 4
Shivam Gautam
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 5
Nitin Patel
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Ravi Kumar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 7
Ankur Gupta
Comprehensive Forestry Course

Rank – 8
Deependra Lodhi
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 9
Kapil Chauhan
Comprehensive Forestry Course

Rank – 10
Alok Kumar Jhariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 11
Tarun Chouhan
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 12
Raghvendra Thakur
Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP

11 Out of **12** Total Selections in

Assistant Conservator of Forest (ACF) 2023

108 Out of **126** Total Selections in

Range Forest Officer (RFO) 2023

Rank – 1
Arvind Ahirwar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 2
Pushpendra Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Narendra Gunare
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 4
Jitendra Kumar Verma
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 5
Jaishrish Barethiya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Bhavna Sehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 7
Pradeep Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 8
Anil Kumar Gour
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 9
Aakash Kumar Malviya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 11
Rajesh Kumar Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 12
Veerendra Prajapati
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 13
Dinesh Kumar
Test Series

Rank - 14
Niranjan Dehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 15
Abhinay Chouhan
Test Series

Rank - 18
Sher Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 19
Pradeep Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 21
Amit Sisodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 22
Abhishek Barodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 24
Golu Goyal
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 25
Pawan Raje
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

History of Ancient India & Madhya Pradesh

MODULE – 1

Hornbill classes

EDITION : 2026

+917223970423 **Hornbillclasses.com**

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

SYLLABUS

Unit	Syllabus
MPPSC (Pre) Unit - 1	**HISTORY of INDIA** : Concepts and Ideas - Ancient Indian Knowledge Tradition, Bharatvarsha, Vedas, Upanishad, Aranyaka, Brahman Granth, Shaddarshan, Smritiyan, Rit Sabha-Samiti, Gantantra(Republic), Varnashrama, Purushartha, Rin Sanskara, Panch Mahayagya/Yagya, Principle of Karma, Bodhisatva, Teerthankar. ◈ Salient features, Events and their administrative, Social and Economic Systems of Ancient India. **भारत का इतिहास** : संकल्पना एवं विचार- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतवर्ष, वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, षड्दर्शन, स्मृतियाँ, ऋत सभा समिति, गणतंत्र, वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, ऋण संस्कार, पंचमहायज्ञ/यज्ञ, कर्म का सिद्धांत, बोधिसत्व, तीर्थंकर । ◈ प्राचीन भारत के इतिहास की प्रमुख विशेषताएँ, घटनाएँ एवं उनकी प्रशासनिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्थाएँ।
MPPSC (Pre) Unit - 2	**History, Culture and Literature of Madhya Pradesh** : Major Events and Major Dynasties of Madhya Pradesh. **मध्यप्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य** : मध्यप्रदेश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ, प्रमुख राजवंश।
MPPSC Forest (Main) Section (A) Unit - 1	**History of Madhya Pradesh** : Ancient History of Madhya Pradesh, Prehistoric Period, Protohistoric Period and Historic Period. **मध्यप्रदेश का इतिहास :** मध्यप्रदेश का प्राचीन इतिहास - प्रागैतिहासिक काल, आद्य ऐतिहासिक काल ऐतिहासिक काल।

Copyright © by Hornbill classes

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored, or transmitted in any form or by any electronic, photocopying, recording, or otherwise, without prior permission of Hornbill classes.

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक व सामग्री आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिये प्रदान की गई है और इसे आपके व्यक्तिगत Contact No. से Watermark किया गया है। इस पुस्तक को किसी अन्य व्यक्ति / संस्था / समूह के साथ साझा करना, फोटो कॉपी कराना आदि पूर्णत: वर्जित है, यदि आप इस प्रकार की किसी भी गतिविधि में सम्मिलित पाये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आपका Registration समाप्त कर दिया जायेगा और आपके विरूद्ध उचित दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

Module - 1

CONTENTS

प्राचीन भारत का इतिहास		
1.	इतिहास : परिचय, स्रोत एवं व्याख्यायें	1 – 46
2.	हड़प्पा सभ्यता : परिचय एवं विशेषतायें	47 – 61
3.	वैदिक सभ्यता : परिचय एवं विशेषतायें	62 – 74
4.	महाजनपद काल (छठी शताब्दी ईसा पूर्व)	75 – 85
5.	जैन और बौद्ध धर्म	86 – 104
6.	मौर्य काल (324/322 ई. पू. – 187/185 ई. पू.)	105 – 132
7.	मौर्योत्तर काल (200 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी)	133 – 159
8.	गुप्त काल (300 ईस्वी से 600 ईस्वी)	160 – 173
9.	गुप्तोत्तर काल (600 ईस्वी से 1200 ईस्वी)	174 – 186
मध्य प्रदेश का इतिहास		
1.	प्राक्-इतिहास : मध्य प्रदेश	187 – 191
2.	वैदिक सभ्यता : मध्य प्रदेश	192 – 195
3.	महाजनपद काल : मध्य प्रदेश	196 – 198
4.	मौर्य काल : मध्य प्रदेश	199 – 201

संदर्भ - ग्रंथ सूची

1. भारत का प्राचीन इतिहास : राम शरण शर्मा
2. प्राचीन और मध्यकालीन भारत का इतिहास : उपिन्दर सिंह
3. प्राचीन भारत, एक रूपरेखा : द्विजेन्द्र नारायण झा
4. प्राचीन भारत : रमेशचंद्र मजूमदार
5. अद्भुत भारत : आर्थर लेवेलिन बाशम
6. प्राचीन भारत : हेमचन्द्र रॉय चौधरी
7. स्वतंत्रता के बाद से भारतीय पुरातत्व : ब्रजबासी लाल
8. कला और संस्कृति : वासुदेव शरण अग्रवाल
9. ऋग्वेद : हृदय नारायण दीक्षित
10. अशोक और मौर्यों का पतन : रोमिला थापर
11. सम्राट अशोक महान : डॉ. विश्वनाथ वर्मा
12. प्राचीन भारतीय समाज : डॉ. शशि अवस्ती
13. नन्द और मौर्य युगीन भारत : कल्लिदैकुरिची अय्या नीलकंठ शास्त्री
14. कौटिल्य अर्थशास्त्र : अनिल कुमार मिश्र
15. बुद्ध की चुनी हुई सूक्तियाँ : वियोगी हरि
16. जैन धर्म का मौलिक इतिहास : आचार्य श्री हस्तिमल जी, श्री देवेन्द्र मुनि 'शास्त्री', मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी, पं. शशिकान्त झा
17. जैन धर्म के संप्रदाय : डॉ. सुरेश सिसोदिया
18. बुद्ध चरितम् : रामचन्द्र दास
19. मध्यप्रदेश का इतिहास, प्राचीन काल : डॉ. राजकुमार शर्मा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
20. युग युगीन मध्य प्रदेश : अनुराग सक्सेना
21. मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति : डॉ. एस एल वरे
22. वेदिक हैरिटेज पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
23. इतिहासकार सनोज त्रिवेदी का लेख NBT में
24. NCERT Books (11th & 12th Class)
25. IGNOU (B.A. & M.A. History Study material)
26. Know India Portal
27. Encyclopaedia Britannica

<u>*For PYQs/MCQ's*</u>

28. MPPSC's, CGPSC's, UPSC's, UPPSC's, UKPSC's, Rajasthan PSC's, Assam PSC's, and many other state PSCs' Civil and Forest Service examination papers.
29. भारतीय इतिहास पूर्वावलोकन : समसामयिक घटनाचक्र
30. प्राचीन इतिहास : यूथ काम्पिटिशन टाइम्स
31. NTA / UGC-NET / JRF के लिए इतिहास : यूथ काम्पिटिशन टाइम्स

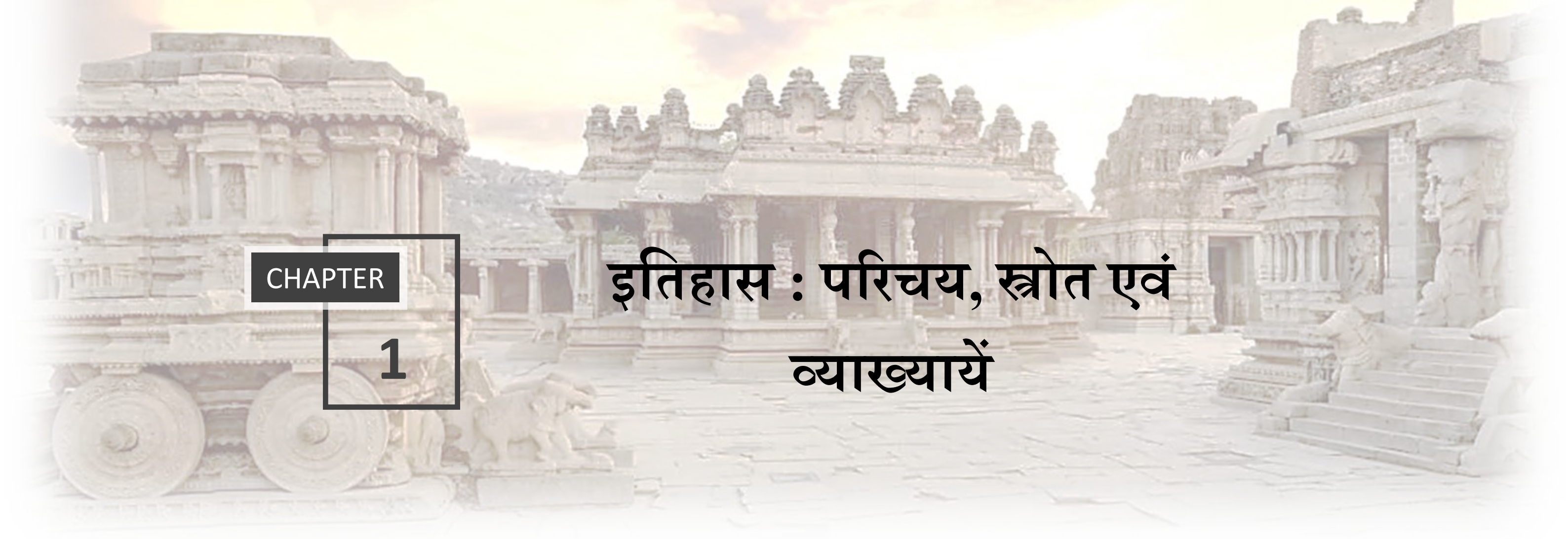

CHAPTER 1

इतिहास : परिचय, स्रोत एवं व्याख्यायें

इतिहास, मानव समाज के अतीत का सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन (Systematic and Scientific study) है, जिसमें अतीत की घटनाओं, प्रक्रियाओं और अनुभवों का विश्लेषण (Analysis) किया जाता है, ताकि वर्तमान के लिये शिक्षाप्रद उदाहरण प्राप्त हो सकें। यह केवल तिथियों और घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों की गतिशीलता को समझने का माध्यम है। भारत का इतिहास सहस्राब्दियों से बुना हुआ एक समृद्ध चित्रपट (Rich Tapestry Woven Over Millennia) है, जिसे विविध संस्कृतियों, साम्राज्यों और बौद्धिक उपलब्धियों द्वारा आकार दिया गया है (Shaped by diverse cultures, empires and intellectual achievements)।

काल विभाजन :

बहुत समय तक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम एवं ब्रिटिश काल में बांटने का प्रयास किया है, परंतु सम्यक अवलोकन (Proper observation) के पश्चात यह विभाजन भ्रामक (Misleading) ही लगता है। इसी करण अधिकांश इतिहासविदों ने इसे प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में विभाजित किया है, और यह विभाजन, पाठ्यकर्ता को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों (Socio-Economic Changes) को देखने का अवसर देता है।

इसके अतिरिक्त, मानव विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं को ध्यान में रखते हुये इतिहास को तीन व्यापक श्रेणियों में बाँटा जाता है -

1. **प्राक्-इतिहास (Pre-history)** : लगभग 3000 ईसा पूर्व से पहले का समय, जब मनुष्य अस्तित्व में था, किंतु लेखन-कला का आविष्कार नहीं हुआ था। इस काल की जानकारी केवल पुरातात्विक अवशेषों से मिलती है।
2. **आद्य-इतिहास (Proto-history)** : लगभग 3000–600 ईसा पूर्व; इस काल के कुछ लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं, किंतु उन्हें पूरी तरह पढ़ा या समझा नहीं जा सका है (उदाहरण: सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि)।
3. **इतिहास (History)** : लगभग 600 ईसा पूर्व के बाद का समय, जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिन्हें पढ़कर समकालीन जीवन के बारे में स्पष्ट जानकारी मिलती है।

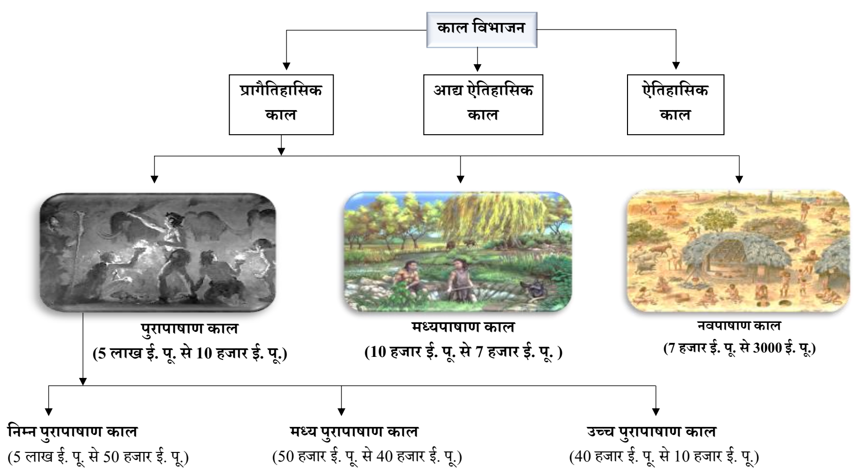

1.1 **भारतीय इतिहास की विभिन्न व्याख्यायें** : भारतीय इतिहास की व्याख्या समय-समय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से हुई है। प्रत्येक दृष्टिकोण के पीछे उस समय की राजनीतिक, वैचारिक और बौद्धिक परिस्थितियाँ रही हैं। प्रमुख दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं –

औपनिवेशिक दृष्टिकोण : **कालखंड** – 18वीं–19वीं शताब्दी

मुख्य उद्देश्य –

- भारतीय समाज और संस्कृति को 'पिछड़ा' सिद्ध करना।
- ब्रिटिश शासन को 'सभ्यता लाने वाला' दिखाना।
- धर्मांतरण व औपनिवेशिक नीतियों को वैध ठहराना।

मुख्य योगदान –

- विलियम जॉन्स द्वारा 1784 में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** की स्थापना।
- मैक्स म्यूलर द्वारा पूर्वी पवित्र ग्रंथ माला (*Sacred Book of the East Series*) का संपादन।
- प्रारंभिक अनुवाद: *मनुस्मृति* (1776, Code of Gentoo Laws), *भगवद्गीता* (1785), *अभिज्ञान शाकुंतलम्* (1789)।

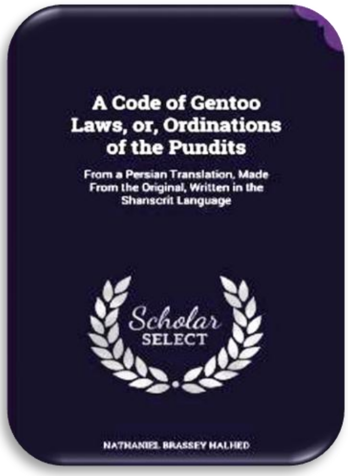

मुख्य आलोचनायें –

- भारतीय इतिहास और सामाजिक व्यवहार को अत्यंत सामान्यीकृत तरीके (Generalized way) से प्रस्तुत किया।
- भारतीयों को इतिहास-बोधहीन, निरंकुश शासन के अभ्यस्त और अध्यात्म में लिप्त बताना।
- विंसेंट स्मिथ द्वारा भारत को ब्रिटिश आगमन से पूर्व 'राजनीतिक रूप से खंडित' बताना।
- कार्ल मार्क्स का एशियाई उत्पादन प्रणाली (Asiatic mode of production) या प्राच्य निरंकुशता (Oriental despotism) सिद्धांत इसी प्रभाव का उदाहरण है।

निष्कर्ष यह है, कि भारतीय इतिहास की यूरोपीय व्याख्या ने भारतीय समाज एवं उसकी उपलब्धियों को कमतर दिखाने एवं औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराने का प्रयास किया। हालांकि, कालक्रम को लेकर कही गई बातें यथार्थ थीं परंतु इन इतिहासकारों द्वारा बताई गई अधिकांश मान्यताएँ या तो निराधार थीं या अतिशयोक्ति से ग्रसित (Baseless Or Exaggerated) थीं। इन व्याख्याओं का उपयोग ब्रिटिश शासन की प्रचार सामग्री के रूप में हुआ, जिसके अंतर्गत भारतीय अतीत में एकल-व्यक्ति शासन पद्धति को सिद्ध करके, अपनी शासन व्यवस्था (वायसराय की अतिकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली / The Viceroy's highly centralized government system) को सही ठहराया गया।

प्राच्यवाद* :** प्राच्यवाद, अंग्रेजी शब्द "**Orientalism**" का हिंदी रूपांतर है, जिसका अर्थ **पूर्वी क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों** से संबंधित है। 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान, पश्चिमी विद्वानों ने स्वयं को केंद्र में रखते हुए, अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के उद्देश्य से पूर्वी संस्कृतियों की एक स्थायी संरचना निर्मित की। इसके तहत, उन्होंने पूर्वी संस्कृतियों को **हीन दृष्टि (Inferiority)** से देखने का प्रयास किया। हालांकि, इसी प्रक्रिया में उन्होंने पूर्वी सभ्यताओं का अध्ययन किया और उनके साहित्यिक स्रोतों का अनुवाद भी किया। प्रमुख प्राच्यवादी विद्वानों में विन्सेंट स्मिथ, विलियम जोंस, हेनरी कोलब्रुक, चार्ल्स विल्किंस, एच. एच. विल्सन और जेम्स प्रिंसेप शामिल हैं।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण : विद्वानों की यह श्रेणी उभरते हुये राष्ट्रीय आंदोलन की उपज (Product Of National Movement) थी। जिस प्रकार भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन उपनिवेशवाद का विरोध कर रहा था, उसी प्रकार उपनिवेशवादी इतिहास लेखन के जवाब और प्रतिक्रिया (Response) में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन विकसित हुआ।

कालखंड – 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक।

विशेषतायें –

- राजनीतिक इतिहास की पुनर्रचना में इनका अधिक योगदान।
- औपनिवेशिक व्याख्याओं का प्रतिवाद।
- भारतीय इतिहास में गौरवपूर्ण युगों की खोज, विशेषत: वैदिक और गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' बताना।

▷ **साहित्यिक स्रोत** : अधिकांश प्राचीन धार्मिक साहित्य सोच्चारण पाठ (Reciting with pronunciation) के लिये बनाये गये थे जिनका वाचन, श्रवण के अतिरिक्त कर्मकाण्डीय उपयोग (Ritualistic use) था। पाण्डुलिपियों (Manuscripts) के चलन के पहले और इसके पश्चात भी मौखिक (श्रुति) परंपरा के द्वारा इन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित (Transferred) किया जाता रहा।

प्राचीन भारतीय साहित्य को प्रायः **धार्मिक और धर्म निरपेक्ष** दो श्रेणियों में बाँटा जाता है, जो सम्यक अवलोकन के पश्चात भ्रामक ही प्रतीत होता है। वस्तुतः, संस्कृत का 'धर्म' शब्द उस आदर्श जीवन शैली (Ideal lifestyle) को व्यक्त करता है, जिसमे लोक व्यवहार, पूजा-पद्धति, परम्पराएं, दर्शन आदि सम्मिलित होते हैं।

वेद	आरण्यक	पाठकर्ता/ऋत्विज	ब्राह्मण
ऋग्वेद	ऐतेरेय, कौषितकी (शांखायान)	होता/ होतृ*	ऐतेरेय, कौषितकी
सामवेद	जैमिनीय (तलवकार), छान्दोग्य	उद्गाता*	पंचविंश*, षडविंश*, जैमिनीय
यजुर्वेद	बृहदारण्यक, तैत्तरीय, मैत्रायणी	अध्वर्यु*	तैत्तरीय, शतपथ
अथर्ववेद	(कोई उपलब्ध नहीं)	ब्रह्म*	गोपथ

उपवेद
आयुर्वेद
गंधर्ववेद
धनुर्वेद
शिल्पवेद* /अर्थशास्त्र

वेद :

हिन्दू परंपरा में वेदों को अपौरुषेय*** कहा गया है, जिसका तात्पर्य है कि ये किसी व्यक्ति द्वारा रचे नहीं गये हैं, अपितु इन्हें मन्त्रदृष्टा ऋषियों द्वारा आत्मसात् किया गया, जो स्वयं देवों द्वारा ऋषियों को प्राप्त हुआ और उनसे उनके शिष्यों को। साहित्य सृजन (Creation) की इस परंपरा को **श्रुति परंपरा*** कहा जाता है, श्रुति का शाब्दिक अर्थ है 'सुना हुआ'। हालांकि इन्हें लिपिबद्ध (Scripted) करने का श्रेय महर्षि वेदव्यास*** को जाता है, जिन्होंने इसे पद्य व गद्य दोनों के रूप में संकलित किया। वेद शब्द की व्युत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'जानना'। वेद चार हैं ऋक्, साम, यजुर्, तथा अथर्व, जिनमें प्रथम तीन को **वेदत्रयी** के अंतर्गत रखा जाता है।

> ❀ **वैदिक साहित्य का परिचय दीजिए?**
> [UPPSC CIVIL MAINS,2023, 8M]

प्रत्येक वेद के चार अवयव (Component) हैं – संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद। इन ग्रंथों का सीधा संबंध अपने वेद से होता है, उदाहरण के लिये – ऋग्वेद के ब्राह्मण, ऋग्वेद के आरण्यक और ऋग्वेद के उपनिषद को ऋग्वैदिक संहिता के साथ मिलाकर **पूर्ण ऋग्वेद** कहा जाता है। इन्हें समझने के लिये वेदांगों (रचना काल – 600-200 ई. पू.) का अध्ययन आवश्यक होता है, जिनकी संख्या 6 है – शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष, कल्प, निरुक्त, एवं छंद। [स्रोत : NCERT एवं वेदिक हैरिटेज पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)]

1. ऋग्वेद

- ऋग्वेद, वैश्विक मानवता का प्रथम शब्द साक्ष्य (The first word of global humanity) तथा दुनिया का सबसे प्राचीन काव्य संकलन है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्था **यूनेस्को (UNESCO)** ने भी ऋग्वेद को प्राचीनतम अन्तर्राष्ट्रीय धरोहर बताया है। ऋग्वेद के रचनाकाल के विषय में 6000 ई. पू. से 1000 ई. पू. के बीच अनुमान प्रस्तुत किये गये हैं किन्तु इतिहासकारों ने 1500 – 1000 ई. पू. के बीच ऋग्वैदिक काल तथा 1000 – 600 ई. पू. के बीच उत्तरवैदिक काल (Later Vedic period) के रूप में स्वीकार किया है।
- ऋग्वेद संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया जाता है – अष्टक क्रम तथा मण्डल क्रम (Ashtak order & Mandal order)। अष्टक क्रम के अन्तर्गत सम्पूर्ण संहिता आठ अष्टकों में विभाजित है और प्रत्येक अष्टक में आठ अध्याय सहित कुल 64 अध्याय हैं। मण्डल क्रम में सम्पूर्ण संहिता में दस मण्डल हैं। प्रत्येक मण्डल में कई अनुवाक, प्रत्येक अनुवाक में कई सूक्त और प्रत्येक सूक्त में कई मन्त्र हैं। इस प्रकार ऋग्वेद-संहिता में 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त और 10580 मन्त्र (ऋचाएं) हैं। इन 1028 सूक्तों में 11 बालखिल्य सूक्त भी आते हैं।
- ऋग्वैदिक सूक्तों के पुरुष रचियताओं में गृत्समद (द्वितीय मण्डल), विश्वामित्र (तृतीय मण्डल), वामदेव (चतुर्थ मण्डल), अत्रि (पंचम मण्डल), भारद्वाज (षष्टम् मण्डल), वशिष्ठ (सप्तम मण्डल), कण्व व अंगिरा (अष्टम मण्डल) आदि प्रमुख हैं। सूक्तों के स्त्री रचयिताओं में लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा, घोषा आदि प्रमुख हैं।

निर्णय (Royal decision) के अभिलेख (अशोक के शिलालेख); उपासना संबंधी लेख जो स्तंभों, पत्थरों, मंदिरों या चित्रों में दिखते हैं; राज प्रशस्ति (Praise) प्रकार के लेख (प्रयाग प्रशस्ति व हाथीगुम्फ़ा अभिलेख) आदि अभिलेखों से विभिन्न ऐतिहासिक सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

- **अन्य अवशेष** : अन्य पुरातात्विक अवशेषों में मूर्तियाँ और प्राचीन भग्नावशेष (Sculptures and ancient ruins) प्रमुख रूप से शामिल हैं। भारत में मूर्तिकला की परंपरा संभवतः कुषाण काल से प्रारंभ हुई, जब पहली बार बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण किया गया। उस समय गांधार कला और मथुरा कला विशेष रूप से प्रचलित थीं। भरहुत, बोधगया, साँची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झलक देखने को मिलती है।

  चित्रकला में बाघ की गुफाओं के चित्र अजंता शैली का आधार प्रतीत होते हैं। अजंता की चित्रकला में भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। इनमें कलाकारों की सूक्ष्म दृष्टि और शिल्पगत कुशलता का प्रदर्शन होता है। अजंता में स्थित 'बोधिसत्व पद्मपाणि' का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

मेसोपोटामिया की क्यूनिफ़ॉर्म लिपि 3400 ई. पू. एवं मिस्र की हायरोग्लिफ़िक्स लिपि 3100 ई. पू. की मानी जाती है। जबकि भारतीय उपमहाद्वीप में लिपि का प्राचीनतम प्रमाण 2600 ई. पू. की हड़प्पा सभ्यता से जुड़ा है। हालांकि अद्यतन अध्ययनों के फलस्वरूप इसका कालखण्ड चौथी सहस्राब्दी होने के प्रमाण भी मिले हैं। यह लिपि उपमहाद्वीप की प्राचीनतम लिपि अवश्य है, किन्तु प्राचीनतम लिपि जिसे पढ़ा जा सके वह ब्राह्मी है,जो चौथी शताब्दी ई.पू. से उपलब्ध होती है।

हड़प्पाई लिपि

मेसोपोटामिया की लिपि

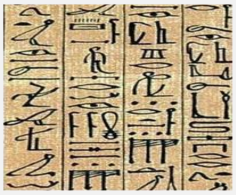
मिस्र की लिपी

ब्राह्मी लिपि

1.3 प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतवर्ष :

भारत, आदिकाल से ही ज्ञानियों, ऋषियों एवं महापुरुषों की भूमि रहा है, जिन्होंने अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा से विश्वभर में ख्याति अर्जित की (Earned fame) थी। भारत की वैदिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और साहित्यिक परंपरायें भारतीय समाज का मार्गदर्शन करती रही हैं, तथा उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को भी प्रभावित किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन गाथाओं का संग्रह होने के साथ ही एक जीवंत और प्रगतिशील धरोहर (Vibrant and progressive heritage) है, जिसने विज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला और चिकित्सा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। भारतीय ज्ञान परंपरा को निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है –

वैदिक ज्ञान : भारत की ज्ञान परंपरा की नींव वेदों में निहित है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भारतीय ज्ञान के प्राचीनतम स्रोत (Oldest source) हैं। वैदिक ज्ञान के अंतर्गत धार्मिक अनुष्ठानों के वृहद वर्णन के साथ – साथ; खगोलशास्त्र, चिकित्सा, दर्शन और नीति संबंधी ज्ञान भी समाहित है। उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष और अद्वैत वेदांत जैसे गूढ़ दार्शनिक विषयों (Esoteric philosophical topics) पर गहन विचार किया गया है। इसके अंतर्गत ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आदि भी आते हैं, जो वेदों की विभिन्न प्रकार की व्याख्यायें हैं।

दर्शनशास्त्र और तर्कविद्या : भारत में छह प्रमुख दर्शनशास्त्र विकसित हुये – न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा (वेदांत)। न्याय दर्शन तर्क और प्रमाणों पर आधारित है, जबकि वैशेषिक दर्शन पदार्थ और उसके गुणों की व्याख्या करता है। सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष के द्वैत पर बल देता है, वहीं योग दर्शन आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के लिये ध्यान और साधना को प्राथमिकता देता है।

physical, verbal or mental) । इस पर श्रीकृष्ण कहते हैं, कि मानव को कर्म करते रहना चाहिए, लेकिन उसमें किसी प्रकार का अहंकार, ममता या आसक्ति का भाव नहीं होना चाहिए (No feeling of ego, affection or attachment) । इसे गीता में इस श्लोक के द्वारा समझाया गया है – "***कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भु माते संगोऽस्त्वकर्मणि***" ।।

- जो कर्म मनुष्य किसी इच्छा या अपने सुख की पूर्ति (Fulfillment of a desire) के लिये करता है, उसे **सकाम कर्म** कहा जाता है। यहाँ 'कामना' शब्द में 'काम' का अर्थ है – अतृप्त इच्छा। उदाहरण के लिये; स्त्री, पुत्र, धन आदि की प्राप्ति के लिये किये गये सभी कर्म सकाम कर्म होते हैं।
- गीता के अनुसार, कर्मों के त्याग को (Not doing deeds) ही वास्तविक अर्थ में **अकर्म** कहा गया है। सामान्य रूप से कर्म, मन, वाणी एवं शरीर से किया जाता है इसीलिये मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक कर्म को त्याग देने का ही नाम अकर्म है (Abandoning the action is called Akarma)।
- **विकर्म** वे कर्म होते हैं, जो शास्त्रों द्वारा निषिद्ध (Prohibited by scriptures) किये गये हैं। वेद और शास्त्र जिन कार्यों को करने से मना करते हैं, वे विकर्म की श्रेणी में आते हैं। उदाहरण – किसी प्राणी की हिंसा करना, अभक्ष्य (न खाने योग्य) का भक्षण करना (Eating inedible), असत्य बोलना, किसी से घृणा करना आदि विकर्म के उदाहरण हैं। ये अशुभ कर्म माने गये हैं, जिनका परिणाम पाप के रूप में प्राप्त (Result is sin) होता है। मनुस्मृति के बारहवें अध्याय में अशुभ फल देने वाले मानस, वाचिक एवं दैहिक विकर्मों का वर्णन किया गया है।

1.9 बोधिसत्व तथा तीर्थंकर :

"बोधिसत्व" शब्द का अर्थ है "बुद्ध बनने वाला" (About to become buddha) । यह बौद्ध दर्शन की अवतारवाद (Incarnation) पर आधारित एक महत्वपूर्ण अवधारणा (Concept) है। बोधिसत्व वह व्यक्ति होता है, जिसने ज्ञान या बुद्धत्व (Enlightenment) प्राप्त कर लिया है, लेकिन सभी संवेदनशील प्राणियों को बुद्धत्व प्राप्त करने में सहायता करने के लिये संसार (सांसारिक अस्तित्व) के चक्र में लौटने की प्रतिज्ञा करता है। यह **महायान बौद्ध मत** के लिये केंद्रीय अवधारणा है, जो सभी प्राणियों की मुक्ति के लिये सार्वभौमिक करुणा और नि:स्वार्थ समर्पण (Universal compassion and selfless dedication) पर जोर देती है।

- इसमें गौतम बुद्ध के पुनर्जन्मों (Reincarnations) का भी वर्णन है , जिसके दौरान उन्होंने पशु, मानव या अन्य रूपों में जन्म लेकर ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रगति की।
- बौद्ध परंपरा के अनुसार, गौतम का जन्म पूर्वोत्तर भारत के एक राज्य में एक राजकुमार के रूप में हुआ था, लेकिन उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिये अपने शाही जीवन (Royal Life) और धन का त्याग कर दिया। अंततः, वे एक बोधिसत्व से पूर्णतः जागृत बुद्ध बन गये।
- एक बोधिसत्व, बोधिचित्त विकसित करता है, जो सभी प्राणियों के लाभ के लिये बुद्धत्व प्राप्त करने की करुणा (Compassion) के साथ एक सहज इच्छा है।
- बौद्ध धर्म की 6 पारमिताओं/सिद्धियों (Perfections) को पूर्ण करके ही बोधिसत्व बना जा सकता था।

(बाएँ से दाएँ) – बोधिसत्व : पद्मपाणि, तारा, मैत्रेय

© Hornbill classes +91 78802-71423 Hornbillclasses@gmail.com

टेराकोटा वस्तुयें और मुहरें : हड़प्पा सभ्यता की महत्वपूर्ण पहचान उनकी **अग्नि में पकी मिट्टी (Terracotta)** द्वारा निर्मित वस्तुयें हैं। टेराकोटा के साँड, भैंस, बंदर, कुत्ते आदि बड़ी संख्या में प्राप्त हुये हैं। टेराकोटा निर्मित मानवीय आकृतियों में स्त्री मूर्तियाँ अत्यधिक मात्रा में मिली हैं, साथ ही चूड़ियाँ, मुखौटे आदि भी प्राप्त हुये हैं।

हड़प्पा की मुहरें (Seals) संभवतः सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे विशिष्ट कलाकृतियाँ हैं, इनका उपयोग संभवतः लंबी दूरी के संचार की सुविधा के लिये किया जाता था। संभवतः सामग्री का एक बोर या थैला एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जाने पर इसका मुंह रस्सी से बाँध कर गाँठ पर कुछ गीली मिट्टी चिपका दी गई थी, जिस पर प्रभाव छोड़ने के लिये एक या एक से अधिक मुहरें दबाई गई थीं, यदि थैला अपनी सील बरकरार रखते हुये पहुंचता था, तो इसका मतलब था कि यात्रा के दौरान इसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई। ये मुहरें आंतरिक के साथ बाह्य व्यापार को भी दर्शाती हैं क्योंकि इनकी प्राप्ति अनेक बाह्य स्थलों से हुई है। कुछ सीलें धार्मिक प्रतीकों को भी दर्शाती थीं, जैसे – पशुपति मुहर, एक श्रृंगी मुहर आदि। इनका निर्माण मुख्यतः सेलखड़ी से होता था, किन्तु चर्ट, फेयन्स, तांबा एवं टेराकोटा द्वारा निर्मित मुहरें भी प्राप्त हुई हैं।

फारस की खाड़ी	मेसोपोटामिया	हड़प्पा
गोल बटन मुहर	**बेलनाकार मुहर**	**आयताकार मुहर**

धातुकर्म तकनीक (Metallurgy) : हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त वस्तुओं में पत्थर से बनी वस्तुयें बहुत कम मात्रा में मिली हैं, परंतु इस कला की उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता। मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रस्तर मूर्ति (Soapstone sculpture/ सेलखड़ी निर्मित) जिसे **पुरोहित – राजा (Priest King)** की संज्ञा दी गई है, इसका उदाहरण है। इसके साथ ही एम एस वत्स द्वारा खोजी गई लाल जैस्पर (बलुआ पत्थर) की पुरुष के धड़ (Male Torso) की मूर्ति भी हड़प्पा की कलात्मक विशेषता की द्योतक (Indicator) है। अन्य धातुओं में तांबे तथा टिन या आर्सेनिक को मिलाकर कांस्य से बनी हुई अनेक वस्तुयें प्राप्त हुई हैं, जैसे – मूर्तियाँ, तीराग्र, भाले, छोटे तलवार, दर्पण, चूड़ियाँ आदि। इन वस्तुओं में मोहजोदड़ो से प्राप्त कांस्य की नर्तकी (Dancing girl) की मूर्ति भी महत्वपूर्ण है। इसे लुप्त – मोम पद्धति (Lost Wax Method) से बनाया गया था, जिसका प्रयोग आज भी भारत के कई स्थानों में होता है।

आभूषण, मनके एवं वस्त्र : सिंधु घाटी के लोग पहनावे के प्रति जागरूक थे। विभिन्न प्रकार की बालों की शैली, दाढ़ी शैली, शॉल पर ट्रेफ़ोइल पैटर्न (Trefoil pattern), चूड़ियाँ, बाजूबंद और ताबीज का भारी उपयोग उनकी स्पष्ट रुचि को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त मनकों का निर्माण (Bead making) भी हड़प्पा सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता थी। इस समय अर्ध – कीमती पत्थरों को भेद कर मनके बनाने के लिये एक नए प्रकार की बेलनाकार ड्रिल का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

© Hornbill classes
+91 78802-71423 Hornbillclasses@gmail.com

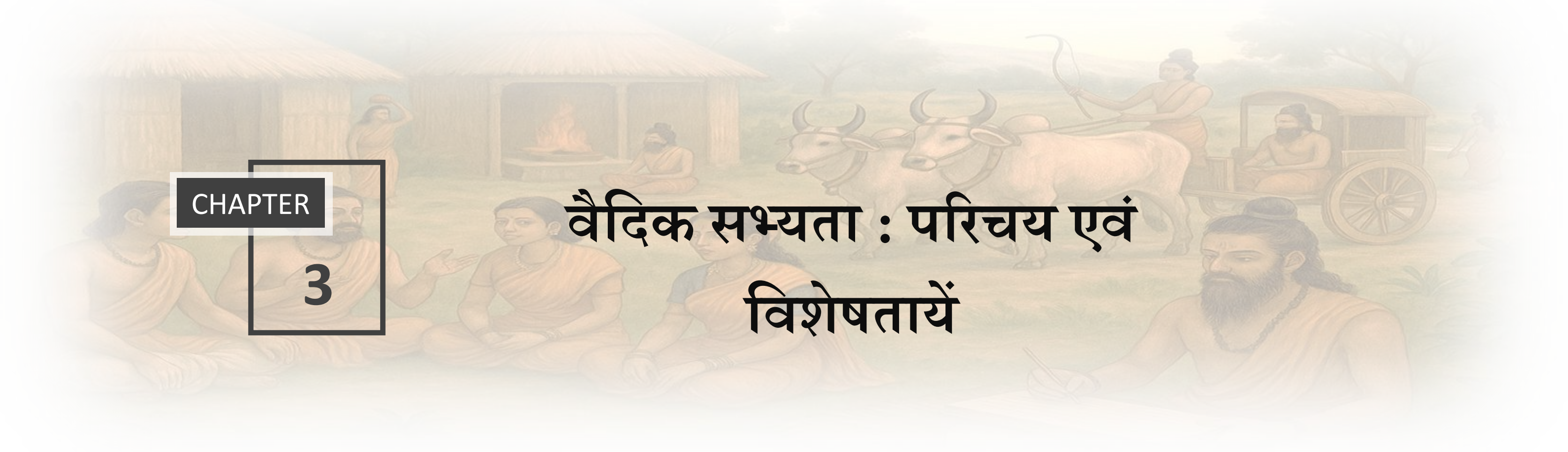

CHAPTER 3

वैदिक सभ्यता : परिचय एवं विशेषतायें

वैदिक सभ्यता, जो प्राचीन भारत में फली-फूली, पारंपरिक रूप से (Traditionally) लगभग 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व की मानी जाती है। इसका नाम हिंदू धर्म के सबसे पुराने एवं पवित्र ग्रंथ वेदों के नाम पर रखा गया है। प्राचीन भारतीय इतिहास के इस कालखण्ड से जुड़ा हमारा ज्ञान पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या के स्थान पर प्रायः शुद्ध रूप से वैदिक ग्रंथों की व्याख्या पर निर्भर करने लगता है। कभी-कभी उन पुरातात्विक साक्ष्यों को रेखांकित किया जाता है जो वैदिक ग्रंथों में वर्णित तथ्यों की पुष्टि (Confirmation of facts) करते हैं।

आर्य/इण्डो-आर्य : भाषिक–सांस्कृतिक समूह (न कि नस्लीय)

- ऋग्वेद में "आर्य" शब्द 36 बार आया है। यह मूलतः सांस्कृतिक समुदाय (Cultural Community) का द्योतक माना जाता है। ऋग्वेद के रचनाकारों ने भी स्वयं को आर्य के रूप में संबोधित (Address) किया है, जिसके सांस्कृतिक अर्थ (cultural implications) हैं।
- इराक के कस्सित और सीरिया के मित्तानी अभिलेखों में वैदिक-सदृश नाम / शब्दावलियाँ मिलती हैं।
- मूलशब्द 'अर' का अर्थ कृषि हो सकता है एवं 'आर्य' शब्द को बंधु-बांधव या गोतिया (Relatives) के रूप में देखा जा सकता है। ऋग्वेद, कई बार ईरानी भाषा के ग्रंथ अवेस्ता से समानता दर्शाता है। दोनों ग्रंथों में देवताओं एवं सामाजिक वर्गों के लिये एक जैसे शब्द प्रयोग किये गये हैं।
- "इण्डो-आर्य/भारोपीय" को आधुनिक इतिहासलेखन में भाषाई / सांस्कृतिक समूह के रूप में लिया जाता है; नस्लीय (Racial) पढ़ना अनुपयुक्त है।

मूल स्थान : विद्वानों के बीच इस बात को लेकर विवाद है कि भारोपीय भाषा प्रयोग करने वालों का मूल स्थान कहाँ था। कई सिद्धांतों के अनुसार तिब्बत, अफ़ग़ानिस्तान, अरब सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, काकेशस, यूराल पर्वत, मध्य एशिया के स्टेपी मैदान, या भारत इनके मूल स्थान हो सकते हैं। इन सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक मान्यता **दो स्थानों** – काला सागर के उत्तर में स्थित पूर्वी यूरोप के मैदानी भाग तथा मध्य एशिया को प्राप्त है। 2018 में हुये DNA foot printing शोध से यह सिद्ध हुआ कि आर्यों ने कज़ाक पहाड़ी से दक्षिण में प्रस्थान करते हुये लगभग 1500 ई. पू. में दक्षिण एशिया में प्रवेश किया।

विद्वान	निवास संबंधी मत
मैक्समूलर	मध्य एशिया
दयानंद सरस्वती	तिब्बत
बाल गंगाधर तिलक	आर्कटिक क्षेत्र (उत्तरी ध्रुव)
गार्डन चाइल्ड एवं नेहरिंग	रूस
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
विनायक दामोदर सावरकर	मध्य एशिया (ईरान)

आर्यों का आगमन एवं युद्ध : इण्डो – आर्यों के भारत आगमन की स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती, किन्तु आज प्रायः सभी इतिहासकारों ने भारतीय उपमहाद्वीप में किसी बड़े आर्य आक्रमण की अपेक्षा **छोटे-छोटे टुकड़ों में आगमन** (Aryan Migration/Immigration) के सिद्धांत को माना है। इस सिद्धांत के पक्ष में साहित्यिक साक्ष्य के रूप में 1400 ई. पू. का मित्तानी अभिलेख तथा बोगाजकोई अभिलेख (तुर्की) को देखा जाता है, जिसमें 4 ऋग्वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र, नासत्य (अश्विनी कुमार) एवं वरुण का उल्लेख है, और अग्नि का उल्लेख नहीं है (जबकि अग्नि वैदिक काल में अत्यंत प्रमुख देवता थे)। इससे यह पता चलता है कि आर्यों का आगमन कई चरणों में (In phased manner) हुआ। इनके आप्रवर्जन (Immigration) और इसके लिये चयनित मार्गों के विषय में कोई सहमति नहीं है।

CHAPTER 4

महाजनपद काल

गंगा नदी घाटी **छठी शताब्दी ईसा पूर्व** में दार्शनिक जिज्ञासुओं की भूमि (The land of philosophical seekers) थी, जहाँ सामाजिक, धार्मिक एवं अर्थिक परिवर्तनों (Social, Religious and economic changes) की धारायें भी बह रही थीं। वास्तव में, ये परिवर्तन वैदिक काल के अंत में प्रारंभ कुछ प्रक्रियाओं की पराकाष्ठा (Culmination of the changes) के रूप में देखे जा सकते हैं। प्राचीन भारत का एक युग, जिसे अक्सर महाजनपद काल के रूप में जाना जाता है, उपमहाद्वीप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण समय का प्रतीक है, जो लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक का है। इस युग की विशेषता सोलह प्रमुख राज्यों का उदय है, जिन्हें महाजनपद के नाम से जाना जाता है।

> ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की राजनीतिक दशा पर प्रकाश डालिए।
> [MPPSC Civil (Main) 2018; 6M]

सिंधु – गंगा के मैदानी इलाकों में फैले ये राज्य कबीलाई समाज व संस्थाओं से अधिक जटिल और संगठित समाज (More organized and Complex societies) तथा राजनीतिक संस्थाओं में बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस समय के दौरान बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे गहन दार्शनिक और धार्मिक आंदोलन (Philosophical and Religious movements) उभरे, जिन्होंने पुरातन वैदिक परंपराओं को चुनौती दी और एक जीवंत और गतिशील बौद्धिक परिवेश (Vibrant and dynamic intellectual environment) विकसित करने में योगदान दिया।

4.1 **स्रोत** : महाजनपद काल के साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोत प्रचुरता (Abundantly) से उपलब्ध हैं। इस काल में पहली बार ऐसी परिस्थिति बनी जब पुरातात्विक साक्ष्यों और साहित्यिक स्रोतों के बीच तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study) किया जा सका। स्रोतों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं – साहित्यिक एवं पुरातात्विक।

साहित्यिक :

- साहित्यिक स्रोतों के अन्तर्गत ब्राह्मण ग्रंथों में धर्मसूत्र आते हैं, जिनकी रचना गौतम, आपस्तम्ब, बौधायन और वशिष्ट द्वारा लगभग 600 – 300 ईसा पूर्व में की गई थी। इनमें इस काल के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है, इनका वास्तविक उद्देश्य सामाजिक व्यवहारों को ब्राह्मण परंपरा अनुसार, नियम – विनियम में बांधना (To bind by rules and regulations) था।
- पुराणों से राजवंशों के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है, हालांकि इसमें एकरूपता नहीं मिलती और कई बार अलग – अलग राजा और राजवंश आपस में मिला दिए जाते हैं, जिससे सटीक सूचना नहीं मिल पाती।
- पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी एक अद्वितीय (Unique) पुस्तक है, जो संस्कृत व्याकरण ग्रंथ होते हुये भी इस काल की परंपराओं, संस्थाओं, सिक्कों, माप-तौल पद्धति, आस्था एवं आध्यात्मिक व्यवहार की विशिष्ट सूचनाएं प्रदान करती है।
- इसके अतिरिक्त बौद्ध साहित्य में जातक कथायें, सुत्तपिटक में वर्णित निकाय (मज्झिम, संयुक्त एवं अंगुत्तर), सुत्तनिपात आदि आते हैं। इनका लेखन मध्य गंगा घाटी का माना जाता है।
- जैन साहित्य में जैन धर्म सूत्र, भगवती सूत्र, परिशिष्टपर्वन जैसी रचनायें हैं, जिनसे इस काल की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।
- साथ ही विदेशी साहित्य में हेरोडोट्स तथा सिकंदर के साथ आए विद्वान निर्याकस, आनासिक्रटस, आरीष्टोबुलस आदि का विवरण है जिनके द्वारा उत्तर पश्चिमी भारत का उल्लेख किया गया है।

CHAPTER 5

जैन और बौद्ध धर्म

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मध्य गंगा के मैदानी भाग में तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के कारण कई धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ, जिनमें लगभग 62 संप्रदायों की जानकारी प्राचीन स्रोतों से प्राप्त होती है। यह, **सामाजिक परिवर्तनों का काल** था, जिसके अंतर्गत वैदिक कर्मकाण्ड की जटिलता, बढ़ते शहरी–वाणिज्यिक जीवन, गिल्ड/संघ और नई विचार-धाराओं की मांग के बीच जैन और बौद्ध जैसे श्रमणिक आंदोलन उभरे।

इन धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भारतीय समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला। हालांकि इन दोनों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पूर्ववर्ती वैदिक धर्म जैसी ही थी और वे उपनिषदों के दर्शन से प्रेरित थे, परंतु वैदिक धर्म की **जटिलता और कुप्रथाओं** के विरुद्ध इन्होंने तीखी प्रतिक्रियाएं दीं और आम जनमानस के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुए।

5.1 नए धर्मों के उद्भव के कारण :

> - **प्राचीन काल में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उदय के कारणों का उल्लेख कीजिए ?** [IFoS 2018 /10M / 125 words]
> - **भारत में बौद्ध धर्म के उदय की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ।** [MPPSC MAINS 2018; 6M]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में धार्मिक अशांति का काल था, ऐसे में जैन और बौद्ध धर्म बदलते समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पन्न हुए, एक उभरते वर्ग द्वारा संरक्षण प्राप्त किया और भारत की संस्कृति, वास्तुकला, दर्शन और जीवन शैली पर एक अमिट छाप छोड़ी।

- उत्तर-पूर्वी भारत में इन धर्मों के उदय का मुख्य कारण एक नई कृषि अर्थव्यवस्था का विस्तार होना है। लोहे के उपयोग से जहाँ एक ओर घने जंगलों को काटने में आसानी हुई और कृषि के लिये अधिक भूमि मिली, वहीं दूसरी ओर लोहे के हलों द्वारा कृषि किए जाने पर कृषि में अधिशेष उत्पादन हुआ और द्वितीय नगरीकरण के फलस्वरूप बड़े नगरों का निर्माण संभव हुआ। हल पर आधारित कृषि अर्थव्यवस्था के लिये बैलों की आवश्यकता थी और वैदिक बलि प्रथाओं के कारण बड़ी मात्रा में मवेशियों को मारा जाता था। इसलिये तत्कालीन किसान और पशुपालक वर्ग नए धर्मों की ओर उन्मुख हुआ।
- तत्कालीन वर्ण व्यवस्था में जन्म आधारित कठोरता भी इनके उदय के सामाजिक कारणों में शामिल थी। ब्राह्मणों का उच्चतम दर्जे का दावा एवं विशेषाधिकार, अन्य वर्गों को आंदोलित करने के लिये पर्याप्त थे। क्षत्रिय, जो शासक थे, ब्राह्मणों के धार्मिक वर्चस्व के विरूद्ध जबरदस्त प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे। जैन धर्म के प्रवर्तक वर्धमान महावीर एवं बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध, दोनों क्षत्रिय कबीलों से थे और दोनों ने इस वर्चस्व को चुनौती दी।
- वैदिक धर्म की जटिलता और कर्मकाण्डों की अधिकता के कारण लोगों का झुकाव नए धर्मों की ओर हुआ। स्तुति पाठ एवं साधारण यज्ञों का स्थान जटिल अनुष्ठानों ने ले लिया, जो आम जन की पहुँच से बाहर थे। साथ ही वैदिक साहित्य एवं दर्शन की भाषा संस्कृत थी, जो इस काल तक मात्र विद्वानों की भाषा रह गई थी। वहीं बुद्ध एवं महावीर के उपदेश आमजन की भाषा पालि और प्राकृत में होते थे तथा वे सरल एवं संयमित जीवन की बात करते थे, जिस कारण से लोग इनकी ओर आकर्षित हुए।
- बड़े शहरों के निर्माण से व्यापार एवं शिल्प को प्रोत्साहन मिला। मुद्राशास्त्रियों द्वारा हज़ारों चांदी और तांबे के पंच-मार्क्ड (आहत) सिक्कों की खोज इस युग में व्यापार के विकास को दर्शाती है, जिससे वैश्य वर्ग के महत्व में वृद्धि हुई। पूर्ववर्ती व्यवस्था में उनका स्थान तीसरा था, हालांकि वे *द्विज* की श्रेणी में आते थे, किन्तु समाज में अपनी स्थिति सुधारने के लिये प्रयासरत थे। इसी के चलते वैश्यों और सेट्ठियों ने महावीर एवं गौतम बुद्ध दोनों को अपार समर्थन एवं उपहार-भेंट प्रदान किया।

CHAPTER 6

मौर्य काल

मौर्य साम्राज्य (324/322 ई. पू. – 187/185 ई. पू.), प्राचीन भारत का एक महान और शक्तिशाली साम्राज्य था, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े हिस्से पर शासन किया। यह वक्षु घाटी (Oxus/Amu Darya, मध्य एशिया) से लेकर कावेरी डेल्टा तक फैला था तथा अपने शासकों द्वारा सुगठित व केंद्रीकृत शासन था।

नन्द शासकों के अत्याचारों से मगधवासियों को मुक्ति दिलाकर इसकी स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की एवं आचार्य चाणक्य की रणनीतिक सहायता से मगध की सत्ता प्राप्त की। मौर्यों ने भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया, और भविष्य के शासकों के लिए न केवल राजनीतिक, बल्कि आर्थिक, और धार्मिक आदर्श भी प्रस्तुत किया। मौर्य साम्राज्य का निर्माण नंद शासकों द्वारा डाली गई नींव पर हुआ था।

इस वंश के पहले तीन शासक क्रमशः चन्द्रगुप्त (324/22-297 ई.पू.), बिन्दुसार (297-273 ई.पू.), तथा अशोक (273-232 ई.पू.) थे। परवर्ती मौर्यों का शासन 185 ई.पू तक चला।

स्रोत : मौर्य काल के स्रोतों में तत्कालीन समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, और संस्कृति की विस्तृत व्याख्या मिलती है। ये स्रोत इसके पहले के किसी भी काल की अपेक्षा अधिक विविधता रखते हैं।

साहित्यिक :

- मौर्य काल के साहित्यिक स्रोतों में आचार्य चाणक्य का *अर्थशास्त्र* अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसे राज्य का विज्ञान कहा गया है और इसमें 15 अधिकरण (अध्याय) हैं। इनमें से प्रथम पाँच अधिकरण आंतरिक प्रशासनिक तंत्र पर केंद्रित हैं, उसके बाद के आठ अधिकरण अंतर्राज्यीय संबंधों (अवाप) से संबंधित हैं, जबकि अंतिम दो मिश्रित विषयों पर चर्चा करते हैं। यह ग्रंथ शासन, राजनीति और कूटनीति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ।
- इस काल की जानकारी अन्य **संस्कृत ग्रंथों** से भी मिलती है। इसमें पुराणों के साथ-साथ विशाखादत्त का *मुद्राराक्षस*, कामंदक का *नीतिसार*, पतंजलि का *महाभाष्य*, क्षेमेन्द्र की *वृहतकथामंजरी*, बाणभट्ट का *हर्षचरित* और हरिषेण का *वृहतकथाकोष* उल्लेखनीय हैं।
- **जैन साहित्य** में हेमचन्द्र का *परिशिष्टपर्वन* और भद्रबाहु का *कल्पसूत्र* प्रमुख स्रोत हैं। इनमें चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अन्य मौर्य शासकों से संबंधित विवरण प्राप्त होता है, जो जैन परंपरा में मौर्यों के प्रभाव को दर्शाता है।
- **बौद्ध साहित्य** में महावंश, दीपवंश, अशोकावदान, दिव्यावदान, मिलिन्दपन्ह, वंसत्थपकासिनी, सुमंगलविलासिनी और समन्त पासादिका जैसे ग्रंथ प्रमुख हैं। इनसे मौर्य शासकों, विशेषकर अशोक के शासनकाल और बौद्ध धर्म के प्रसार की जानकारी मिलती है।
- इसके अतिरिक्त तमिल कवि ममूलनार की कविता अकनानुरु (अकम 251) में मौर्यों के दक्षिण की ओर विस्तार का उल्लेख मिलता है। तिब्बती बौद्ध लामा तारानाथ द्वारा लिखित *भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास* में मौर्यों से संबंधित कई मिथकीय वृत्तांत दर्ज हैं।
- विदेशी साहित्य में मेगस्थनीज का इण्डिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यद्यपि यह ग्रंथ मूल रूप में अब उपलब्ध नहीं है, किंतु इसके उद्धरण डियोडोरस, स्ट्रॉबो, एरियन और प्लिनी जैसे लेखकों की कृतियों में मिलते हैं। मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र नगर का उल्लेख

CHAPTER 7

मौर्योत्तर काल

मौर्य साम्राज्य के विघटन से गुप्तकाल , मौर्योत्तर काल (200 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी) कहलाता है, जिसमें उपमहाद्वीप में सशक्त केंद्रीकृत सत्ता का अभाव रहा। इस राजनीतिक शून्यता में अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ उभरीं, जैसे – पूर्व-मध्य में शुंग/कण्व, दक्कन में सातवाहन, और उत्तर-पश्चिम में इंडो-ग्रीक/शक/पार्थियन/कुषाण। यह काल प्राचीन से मध्यकालीन भारत की ओर संक्रमण काल कहलाता है, जहाँ धार्मिक पुनरुत्थान (वैदिक/ब्राह्मणिक), बौद्ध–जैन के क्षेत्रीय प्रसार, और वैश्विक वाणिज्य–सांस्कृतिक संपर्क साथ-साथ दिखते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी यह काल परिवर्तन का साक्षी रहा। गंगा घाटी और दक्कन में वैदिक धर्म का पुनरुत्थान हुआ, जबकि उड़ीसा में जैन धर्म का प्रभाव व्यापक रूप से देखा गया।

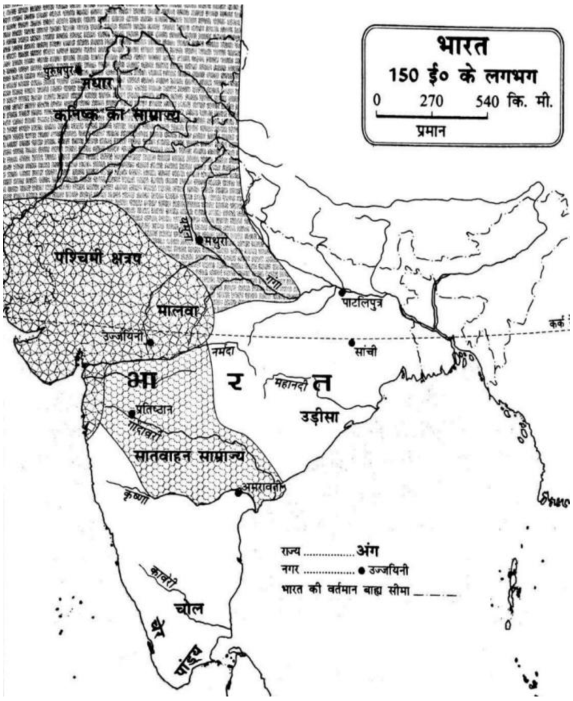

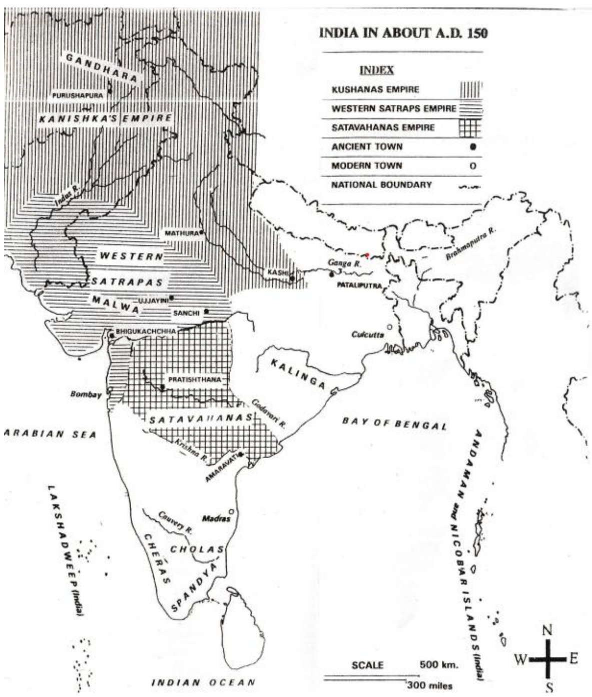

मानचित्र स्रोत : प्राचीन भारत एक रूपरेखा, डी. एन.

स्रोत : इस काल के इतिहास के अध्ययन के लिए स्रोतों की विविधता और उनका व्यापक परिमाण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन स्रोतों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है –

साहित्यिक :

- पतंजलि का *महाभाष्य* शुंग काल का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत है। पतंजलि शुंग राजा पुष्यमित्र के **राजपुरोहित** थे और उनकी इस कृति से शुंग इतिहास व तत्कालीन समाज के विषय में जानकारी मिलती है।
- *महाभाष्य* मूलतः पाणिनी की *अष्टाध्यायी* पर टीका है, जिसमें व्याकरण के साथ-साथ प्रसंगवश राजाओं का वर्णन मिलता है। इसमें शिक्षा और निरुक्त जैसे वेदांग विषयों की चर्चा भी मिलती है।

- गांधार कला में सर के पीछे प्रभामण्डल की रचना की जाती है, परवर्ती भारतीय कला में भी प्रभामण्डल का निर्माण देखा गया है। प्रभामण्डल की रचना भारतीय कला को गांधार कला की एक विशिष्ट देन है। मूर्तियों में बना प्रभाचक्र साज-सज्जा, अलंकरण से रहित है, जबकि मथुरा शैली में इसे अलंकृत किया गया है।

2. मथुरा कला शैली

मथुरा प्राचीन काल से ही भारत का एक प्रसिद्ध नगर रहा है। यह व्यापारिक केंद्र होने के साथ-साथ कुषाणों की राजधानी भी था, जिसके कारण ईसा की प्रथम शताब्दी से ही यह कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। इस काल में मथुरा से असंख्य मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें बौद्ध, जैन और हिंदू धर्म से संबंधित विषय सम्मिलित हैं। इतिहासकारों, जैसे – वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि बुद्ध की पहली प्रतिमा मथुरा शैली में ही बनाई गई थी।

मथुरा शैली में बनी बैठे हुए बुद्ध की प्रतिमाएं विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इनमें सामान्यतः सिंहासन पर सुखासन में विराजमान बुद्ध को अभयमुद्रा में दर्शाया गया है। उनके केश या तो घुंघराले होते हैं या केशविहीन होते हैं, और उनके सिर पर उष्णिष स्थित रहता है, जो शंख के आकार का प्रतीत होता है। बुद्ध की प्रतिमाओं में उनकी पारदर्शी धोती का एक छोर वक्षस्थल पर लिपटा होता है और दूसरा बायें कंधे के ऊपर रखा जाता था।

मथुरा के कंकाली टीला से बड़ी संख्या में जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। एक बैठे हुए तीर्थंकर की प्रतिमा भी है, जिसका सर टूटा हुआ है। बौद्ध प्रतिमाओं की भांति इन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं में भी बड़े कान बनाए गए हैं, तथा भौहों (भ्रूमध्य) पर उर्ण नामक पवित्र चिह्न देखा जा सकता है।

(बाएँ से दाएँ) – पद्मासन मुद्रा में बुद्ध, बैठे हुए तीर्थंकर, सूर्य देव, शिव पुत्र कार्तिकेय; स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स व उपिन्दर सिंह

संवत की प्रारंभिक शताब्दियों में विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं से संबंधित प्रतिमाशास्त्र का पूर्ण विकास हो चुका था। मथुरा क्षेत्र में शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, दुर्गा और लक्ष्मी की प्रतिमाएँ निर्मित की जा रही थीं। कंकाली टीला से प्राप्त सूर्य की एक प्रतिमा के मूंछ, पैरों में बूट और सिर पर मुकुट को देखकर पश्चिमी शैली के प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। इसी स्थल से कार्तिकेय की एक मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसके दाहिने हाथ में भाला जैसा अस्त्र है। शिव की प्रतिमाएँ मानवाकृति और लिंगरूप, दोनों स्वरूपों में बनाई जाती थीं। इसी प्रकार, मथुरा क्षेत्र में वैष्णव प्रतिमाओं का भी निर्माण हो रहा था। वासुदेव कृष्ण, उनके भाई बलदेव और उनकी बहन की संयुक्त प्रतिमाएँ गढ़ी जा रही थीं। वासुदेव कृष्ण के अतिरिक्त, चतुर्भुजी विष्णु, गरुड़ पर विराजमान विष्णु और वाराहरूप विष्णु की प्रतिमाएँ भी बनाई जाती थीं।

इस शैली की विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

- मथुरा कला शैली को विदिशा, सांची और भरहुत में विकसित हो रही कलात्मक परंपराओं के अधिक परिष्कृत स्तर के रूप में देखा जा सकता है। जिसके लेख्य विषय और उपादान भी भारतीय थे।
- इस शैली में मुख्य रूप से चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया, जो कि भरतपुर तथा सीकरी में अधिक होता है। इससे मूर्तियाँ अधिक टिकाऊ और चमकदार बनीं।

CHAPTER

8

गुप्त काल

भारतीय इतिहास में गुप्त वंश को "**स्वर्ण युग**" की संज्ञा दी जाती है। इस काल में भारत ने न केवल राजनीतिक स्थिरता का अनुभव किया, बल्कि कला, साहित्य, विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में भी अभूतपूर्व उन्नति भी देखने को मिली। गुप्त शासकों ने एक संगठित प्रशासनिक प्रणाली विकसित की, जिससे उनका साम्राज्य उत्तर भारत के विशाल भू-भाग तक फैला। चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) जैसे शक्तिशाली शासकों ने साम्राज्य का विस्तार किया और भारत को समृद्ध बनाया।

स्रोत : गुप्तकालीन स्रोतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है – साहित्यिक और पुरातात्विक।

साहित्यिक :

- 300 से 600 ईस्वी सन के मध्य संस्कृत भाषा में उल्लेखनीय विकास हुआ। इस काल में *पुराणों* और *महाकाव्यों* को अंतिम रूप प्रदान किया गया, जिनसे उस समय की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का अनुमान लगाया जा सकता है।
- इसी अवधि में *नारद, विष्णु, बृहस्पति* और *कात्यायन स्मृतियों* का संकलन हुआ। चौथी शताब्दी में कामंदक ने एक शासक को संबोधित करते हुये *नीतिसार* की रचना की, जो राजनीति विषय पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। भोज के श्रृंगार-प्रकाश की एक पांडुलिपि में विशाखादत्त के लुप्त नाटक *देवी-चंद्रगुप्तम्* का एक अंश मिलता है, जो गुप्त वंश के राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
- इसके अतिरिक्त, सोमदेव की *कथासरित्सागर*, महर्षि वात्स्यायन का *कामसूत्र* और अमरसिंह रचित *अमरकोष* जैसी कृतियाँ विशेषज्ञता के इस युग का प्रतिनिधित्व करती हैं। *शिलप्पदिकारम* और *मणिमेकलई* जैसे तमिल महाकाव्यों को दक्षिण भारत के 5वीं/6ठी सदियों के इतिहास का समृद्ध स्रोत कहा जाता है।
- **बौद्ध साहित्य** में *मंजूश्री* नामक एक महायान ग्रंथ का एक अध्याय भारत के इतिहास पर केंद्रित है, जिसमें विशेष रूप से गुप्त, गौड़ और मगध के इतिहास को प्राथमिकता दी गई है। यह ग्रंथ ईस्वी सन् की प्रारंभिक सदियों से लेकर पूर्व-मध्यकाल तक के ऐतिहासिक घटनाक्रम को समेटे हुये है।
- **जैन साहित्य** में भी राजनीतिक जानकारी प्राप्त होती है। जैनों के *हरिवंश पुराण* (8वीं सदी) और *तिलोयपन्नति* जैसे ग्रंथों में राजनीतिक कालानुक्रम का उल्लेख मिलता है।
- तीसरी से आठवीं शताब्दी के मध्य अनेक चीनी बौद्ध भिक्षु भारत आये। उन्होंने बौद्ध ग्रंथों का संग्रह किया तथा बौद्ध महत्त्व के कई स्थलों का भ्रमण भी किया। पाँचवीं शताब्दी को इन यात्राओं की दृष्टि से पराकाष्ठा का युग कहा जा सकता है। यद्यपि उस काल में कई चीनी यात्री भारत आये, परंतु केवल तीन प्रमुख भिक्षुओं – फ़ा-श्यैन, श्वैन-जंग और इत्सिंग, के यात्रा-वृत्तांत ही सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध हैं।
- इस काल में बहुत सारे पश्चिम के विद्वानों ने भी अपने वृतांत लिख छोड़े हैं। 6ठी शताब्दी ईस्वी में लिखा गया कौसमस इण्डिकोप्लूस्टस का *क्रिश्चियन-टोपोग्राफी*, इनमें से एक है। सीजेरिया के प्रोकॉपियस की लेखनी के माध्यम से उस काल में हो रहे भारत-बाइजैंटाइन साम्राज्य के बीच व्यापार की जानकारी मिलती है।

CHAPTER 9

गुप्तोत्तर काल

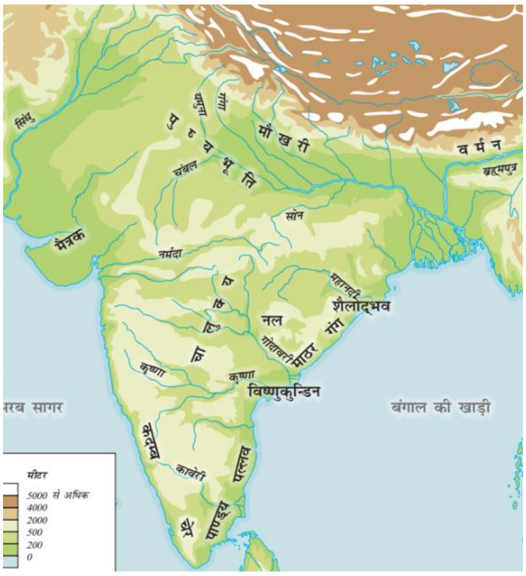

गुप्तोत्तर काल को पूर्व मध्य काल की संज्ञा भी दी जाती है। यह शब्द, प्राचीन युग तथा मध्य युग के बीच की अवधि का द्योतक है। अक्सर इस युग के साथ संकट, पतन और अवनति की धारणा जुड़ी होती है। प्रारंभिक इतिहासों में 'मुस्लिम शासन' के आगमन को इस पतन के कारण के रूप में देखा, बाद के सामंतवादी विचारधारा के समर्थकों ने राजनीतिक विकेंद्रीकरण, कृषकों का बंधुआ मजदूरों में रूपांतरण तथा नगरीय केंद्रों और मुद्रा प्रणाली के पतन के रूप में, इस युग का वर्णन किया है।

छठी शताब्दी के मध्य तक लगभग गुप्त साम्राज्य विखंडित हो गया। इसके पश्चात् सामंतवाद नामक नई प्रवृत्ति के साथ विकेंद्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना का उदय हुआ। हालांकि इस दौरान कुछ प्रमुख राजवंशों ने शासन किया, लेकिन संपूर्ण भारत को एकसूत्र में बांधा नहीं जा सका। राजनीतिक व्यवस्था की यह प्रवृत्ति बाद के काल तक जारी रही। गुप्तोत्तर काल के विभिन्न वंशों का वर्णन निम्नलिखित है –

राजवंश	स्थान	प्रमुख शासक	उपलब्धि
मैत्रक	वल्लभी	भट्टारक, धरसेन, ध्रुवसेन प्रथम, धरनपट्ट गुहसेन, शिलादित्य प्रथम	गुप्तोत्तर काल के नवोदित राज्यों पर सबसे लंबे समय तक शासन किया।
मौखरि	कन्नौज	हरिवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा	इन्होंने हूणों को पराजित कर पूर्वी भारत को उनके आक्रमण से बचाया।
पुष्यभूति (वर्धन)	थानेश्वर	पुष्यभूति, प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन	विशाल राज्य स्थापित किया।
परवर्ती गुप्त	मगध	महासेन गुप्त, देवगुप्त, आदित्य सेन	मौखरियों से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रही।
चंद्र (गौड़)	बंगाल	शशांक	थानेश्वर एवं कन्नौज शासकों से इसकी शत्रुता रही।

9.1 **थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश** : गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्तर भारत के राजवंशों में थानेश्वर (हरियाणा) का पुष्यभूति वंश सर्वाधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली सिद्ध हुआ। पुष्यभूति के द्वारा स्थापित इस वंश को वैश्य जाति से संबंधित माना जाता है। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत*** थे, किंतु हूणों के आक्रमण के बाद उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी।

यह राजवंश हूणों के साथ हुए अपने संघर्ष के कारण प्रसिद्ध हुआ। इस वंश में नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे शासक हुए। प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन एवं हर्षवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री थी। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि वंश के शासक गृहवर्मन के साथ हुआ था। गौड़ शासक शशांक द्वारा राज्यवर्धन को मार दिये जाने के बाद हर्षवर्धन शासक बना।

CHAPTER 1

प्राक्-इतिहास : मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश का प्राक्-इतिहास (Pre-history of Madhya Pradesh) : मध्य प्रदेश, भारत की प्राचीनतम सभ्यताओं और पुरातात्विक खोजों का एक महत्वपूर्ण केंद्र (An important center of archaeological discoveries) रहा है। अनेक विद्वानों, जैसे डॉ. एच.डी. सांकलिया, अरुण सोनकिया, आर.बी. जोशी, बी बी लाल (ग्वालियर) आदि ने इस क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण (Detailed survey) किया है। यहाँ पुरापाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल के अनेक अवशेष मिले हैं, जो मानव विकास और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रमाण (Evidence of human evolution and cultural activities) प्रस्तुत करते हैं।

अरुण सोनकिया

इस क्षेत्र में विभिन्न स्थलों से पाषाण युगीन औजार, जीवाश्म (Fossils), शैलचित्र व रंगीन चित्रकारी, और अन्य कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। सतना, रीवा, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, और सीहोर सहित कई स्थानों पर पुरातत्वविदों ने महत्वपूर्ण खोजें की हैं। मध्य प्रदेश की अनेक नदी घाटियाँ, जैसे नर्मदा, चंबल, बेतवा, और सोन; प्रागैतिहासिक साक्ष्यों का भंडार (Repository of prehistoric evidence) मानी जाती हैं।

पुरापाषाण काल

इस काल को मध्यप्रदेश के संदर्भ में निम्न बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है –

- **नर्मदा घाटी का सर्वेक्षण** : मध्यप्रदेश में मध्य पुरापाषाण संस्कृति के प्रमाण नर्मदा घाटी पर डे टेरा एवं पैटरसन द्वारा प्रतिवेदित (Reported) किये गये थे, जिसका नामकरण उनके द्वारा 'Proto Neolithic' किया गया था। 1878 में एक पुरापाषाण कालीन उपकरण, स्तनपायी जानवर के जीवाश्म (Mammal fossil) के साथ भुतरा में पाया गया। बाद में 1935 में डी टेरा और पीटरसन द्वारा घाटी का सर्वेक्षण किया गया। इसके पश्चात् ए.पी. खत्री (शिवना के किनारे मंदसौर), एच.डी. सांकलिया और सेन (महेश्वर, नवदाटोली), एस.सी. सूपेकर, के.डी. बैनर्जी (मध्य नर्मदा घाटी और सिहोर) डी. सेन (होशंगाबाद, नरसिंहपुर, मण्डला) मैक क्राउन (पिपरनाला), जी.जे.वैनराइट, डब्ल्यू. थिओबोल्ड, जी.एल. बादाम, आर.वी. जोशी (आदमगढ़) के अतिरिक्त कई विद्वानों ने नर्मदा घाटी का सर्वेक्षण किया।
- **पुरापाषाण काल के अवशेष** : कुल्हाड़ियां आदि उपकरण नर्मदा घाटी के उत्तर में विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुई हैं, जिनमें प्रमुख हैं – देवरी, सुखचाईनाला, बुरधाना, केडघाटी, बरखुस तथा संग्रामपुर। नरसिंहपुर स्थित महादेव पिपरिया में डेक्कन कॉलेज के विद्वान एस. जी. सुपेकर को उत्खनन के दौरान 860 पुरापाषाण कालीन उपकरण मिले हैं। महादेव पिपरिया में इससे पहले 1958-59 में ए पी खत्री द्वारा महादेवियन एवं अशुलियन (Mahadevian and Acheulian) प्रकार के औजार खोजे गये थे।

नर्मदा घाटी से प्राप्त ऊपरी पुरापाषाण युग के फलक (ब्लेड)

- **जीवाश्म और मानव साक्ष्य** : होशंगाबाद और नरसिंहपुर के मध्य नर्मदा घाटी जीवाश्म प्राप्ति के लिये प्रसिद्ध है। हथनोरा (सीहोर) से Homo Erectus मानव का साक्ष्य अरुण सोनकिया द्वारा वर्ष 1982 में खोजा गया था। इस खोपड़ी के स्तर से उपकरण प्राप्त नहीं हुये थे तथा यह अवशेष अभी तक प्राप्त मानव अवशेषों में सबसे प्राचीन है। नर्मदा घाटी में मध्य पुरापाषाण कालीन उपकरणों उच्च नर्मदा समूह के साथ प्राप्त होने वाले जीवाश्मों में प्रमुख हैं – इक्वस नमाडिकस, वॉस नमाडिकस, हैक्साप्रोटोडॉन पैलेन्डिकस, एलिफस हाइसूड्रिकस, स्टेगोडान

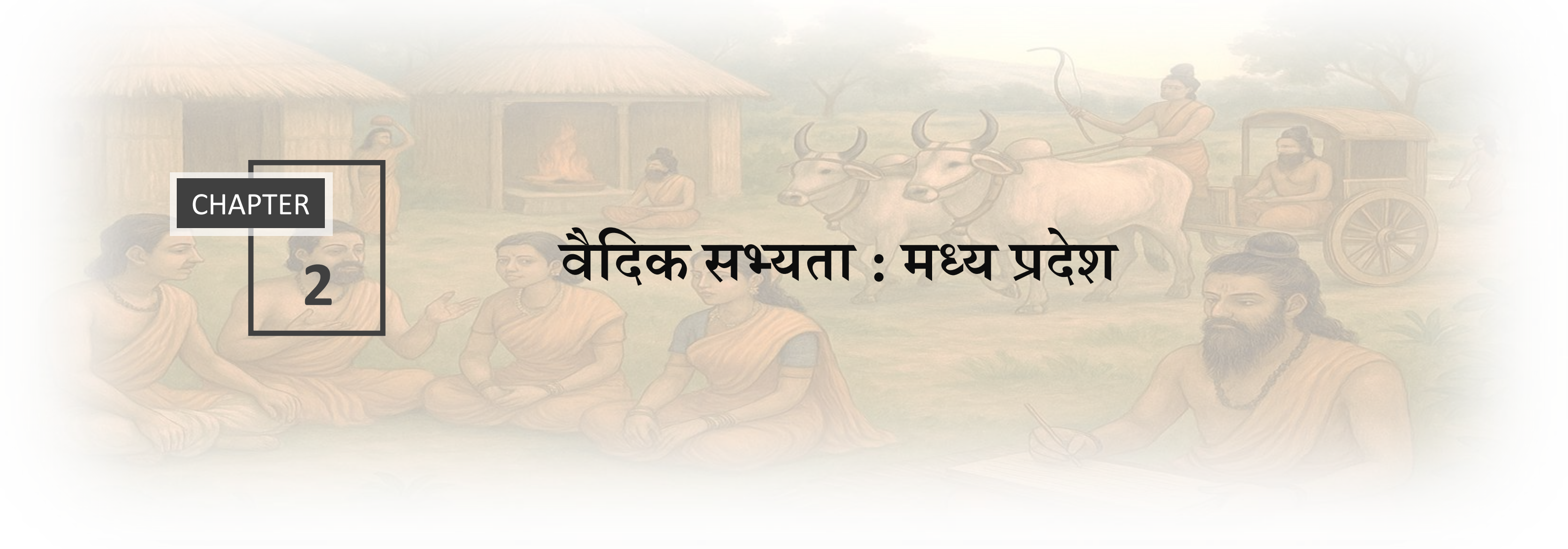

CHAPTER 2

वैदिक सभ्यता : मध्य प्रदेश

ईसा पूर्व छठी शताब्दी से पूर्व के मध्यप्रदेश के इतिहास को जानने के मुख्य साधन वेद, महाकाव्य तथा पुराण ही हैं। इनसे मध्यप्रदेश के परम्परागत इतिहास की जानकारी मिलती है। ऋवैदिक आर्यों की गतिविधियाँ सप्त-सैंधव प्रदेश में केन्दित थीं तथा उत्तर वैदिक काल में आर्यों का विस्तार संपूर्ण गंगा घाटी तक हो गया था, तब भी वर्तमान मध्यप्रदेश तक आर्यों का विस्तार नहीं था। इसलिये मध्यप्रदेश से सम्बन्धित उल्लेख वेदों में नहीं मिलते हैं। हालांकि कुछ उल्लेख वर्तमान मध्यप्रदेश की भौगोलिक सीमाओं या उस सीमा में निवासित जन-समुदायों के बारे में संकेत करते हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण में कुछ अनार्य जातियों का उल्लेख मिलता है, जो वर्तमान मध्यप्रदेश के वन क्षेत्रों में निवास करती थीं। इनमें प्रमुख हैं **पुलिंद**, जो विदिशा के दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में रहते थे, और **निषाद**, जो विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमालाओं के आसपास बसे हुए थे। वेदों में नर्मदा नदी और विंध्य पर्वत का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन केवल नाम न मिलने से यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि आर्य दक्षिण की ओर नहीं बढ़े थे। शतपथ ब्राह्मण में रेवा (नर्मदा) का उल्लेख*** किया गया है।

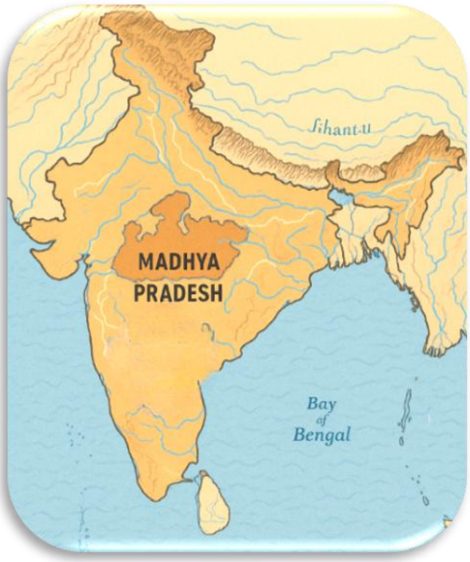

आर्यों के प्रसार को लेकर वेदों और पुराणों में भिन्न जानकारियाँ मिलती हैं। उत्तर वैदिक साहित्य के अनुसार आर्य अपने मूल क्षेत्र पंजाब से पूर्व और दक्षिण की दिशा में फैले, जबकि पौराणिक स्रोतों के अनुसार आर्यों ने पहले मध्यदेश, बिहार और गुजरात जैसे क्षेत्रों में राज्य स्थापित किए और बाद में पंजाब समेत अन्य भागों पर अधिकार किया। पौराणिक दृष्टिकोण यह मानता है कि आर्य बहुत प्राचीन काल से मध्यप्रदेश में बसे हुए थे, जबकि वैदिक साहित्य उन्हें उत्तर वैदिक काल में वहाँ पहुँचते हुए दर्शाता है।

दशराज्ञ युद्ध के बाद ऋषि अगस्त्य के नेतृत्व में यादवों की एक शाखा नर्मदा नदी की घाटी में आकर निवास करने लगी थी। चेदि नामक एक अन्य शाखा यमुना तथा विंध्य क्षेत्र में बस गयी। इस शाखा का एक बहुत शक्तिशाली राजा कशु ज्ञात होता है जिसके बारे में ऋग्वेद के **दान-स्तुति प्रकरण** में उल्लेख है कि उसने अपने पुरोहित ब्रह्मातिथि को 100 ऊंट, 1000 गायें तथा दस राजा, दास के रूप में भेंट किये थे। पुराणों से चेदि यादवों की एक शाखा ज्ञात होते हैं।

वैवस्वत मनु : पौराणिक परंपरा के अनुसार, वैवस्वत मनु के काल में एक प्रलयंकारी बाढ़ आई, जिसने संपूर्ण पृथ्वी को जलमग्न कर दिया। जब पृथ्वी समुद्र में डूबने लगी, तब मनु ने एक विशाल नौका का निर्माण कर उसमें शरण ली। एक मछली, जिसकी मनु ने पहले रक्षा की थी, उस संकट की घड़ी में मनु की सहायता करने आई और उनकी नौका को उत्तर दिशा के एक उन्नत पर्वत पर पहुँचा दिया। जल उतरने के बाद मनु उस पर्वत से नीचे उतरे और पृथ्वी पर मानव जाति की शुरुआत की।

मनु व सप्तर्षियों की मत्स्य द्वारा रक्षा

CHAPTER 3

महाजनपद काल और मध्य प्रदेश

महाजनपद काल में उत्तर भारत में 16 मुख्य जनपद या महाजनपद (षोडश जनपद) थे। इनका उल्लेख मुख्यतया अंगुत्तरनिकाय, महावस्तु, तथा जैन ग्रंथ भगवती श्रौतसूत्र से मिलता है। महावस्तु की सोलह महाजनपदों की सूची में गंधार के स्थान पर शिवि व इसके अतिरिक्त दशार्ण (पूर्वी मालवा) का उल्लेख मिलता है। इन महाजनपदों में कोसल, वत्स, अवन्ति और मगध बुद्ध काल के चार सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य बन चुके थे और उनमें सार्वभौम सत्ता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो चुका था।

सोलह महाजनपदों में से **अवन्ति और चेदी महाजनपद**, प्राचीन मध्यप्रदेश क्षेत्र में स्थित थे। इस काल में अवन्ति महाजनपद का प्रभाव और विस्तार चरम पर था। इसने पश्चिम में राजस्थान का मत्स्य जनपद और उत्तर में मथुरा का सूरसेन जनपद अपने प्रभाव में ले लिया था। इसके साथ ही दक्षिणी पांचाल के कुछ भाग भी अवन्ति में सम्मिलित हो गए थे। बुद्ध के जीवनकाल में ही वत्स जनपद भी अवन्ति के अधिकार में आ गया था। भारत में लघु जनपदों का इस प्रकार बड़े महाजनपदों में विलय, एक सार्वभौम सत्ता (एकीकृत साम्राज्य) के उदय की ओर संकेत करता है। इस प्रकार छठी शताब्दी ईसा पूर्व में अवन्ति, मध्यप्रदेश का एक शक्तिशाली और समृद्ध महाजनपद बन चुका था।

अवन्ति व चेदि जनपद

अवन्ती जनपद

- अवन्ति जनपद शक्ति और विस्तार की दृष्टि से भारत का प्रबलतम् और विशालतम् जनपद था। सर्वप्रथम ऋग्वेद की एक ऋचा में अवन्ति शब्द का उल्लेख मिलता है जिसके आधार पर विद्वान इस नगर के नामकरण की संयोजना करते हैं। ब्राह्मण और आरण्यकों में भी यह नाम आता है। किन्तु **राज्य अथवा स्थान** के नाम की दृष्टि से अवन्ति का प्रथम उल्लेख **पाणिनी** की *अष्टाध्यायी* के सूत्र **स्त्रियामवन्ति-कुरूभ्यश्च** में हुआ है।
- अवन्ति (नगरी/City) और अवन्ती (जनपद) दोनों रूपों का प्रचलन था। इसके अन्य नाम अवन्तिका, अवन्तिपुरी, अवन्तिनगरी, अमरावती, कनकश्रृंगा, कुशस्थली, कुमुदवती, प्रतिकल्पा, विशाला, पुष्पकरण्डिनी, नन्दिनी, नवतेरी, कुणालनगरी, भोगवती, हिरण्यवती, चूड़ामणी आदि प्राप्त होते हैं। अवन्ति राज्य में स्थित दो अन्य स्थलों सुदर्शनपुर*** तथा कुरुरघर पर्वत*** की भी चर्चा महत्वपूर्ण रूप से की गई है।
- यह राज्य दो भागों में विभक्त था, एक उत्तरी भाग जिसे उत्तरी अवन्ति कहा जाता था, जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी। दूसरा दक्षिणी भाग-जिसे अवन्ति दक्षिणापथ कहा गया है। अवन्ति दक्षिणापथ की राजधानी माहिस्मती (माहिस्सति) थी।
- *मार्कण्डेय पुराण* से भी इसकी पुष्टि होती है कि उत्तरी अवन्ति और दक्षिणापथ के बीच वेत्तवती (वेत्रवती) नदी बहती थी।
- *बुद्ध-वंश* में कहा गया है कि भगवान बुद्ध के आसन और बिछौने पर स्तूप रचना अवन्तिपुर राष्ट्र में की गई थी, अवन्तिपुर राष्ट्र से तात्पर्य अवन्ति राष्ट्र की राजधानी उज्यियिनी है, जिसमे कानीपुरा वैश्य टेकरी (बौद्ध महास्तूप)*** अवस्थित है।
- बौद्ध ग्रंथ *दीपवंश* के अनुसार राजा अच्चुतगामी ने उज्जयिनी नगरी की स्थापना की थी।

CHAPTER 4

मौर्य काल : मध्य प्रदेश

चन्द्रगुप्त मौर्य

- नन्दवंश के नौ राजाओं ने मगध पर राज्य किया। लेकिन इस सन्दर्भ में ऐतिहासिक तथ्य प्राप्त नहीं होते कि मध्यप्रदेश से इनका क्या सम्बन्ध रहा। केवल अन्तिम शासक धनानन्द का उल्लेख मिलता है कि वह सिकन्दर का समकालीन था। इस साम्राज्य की सीमायें दूर-दूर तक विस्तृत थीं, जिसमें अवन्तिराष्ट्र सम्मिलित था। धनानन्द को सिंहासन से हटाकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध का राज्य प्राप्त किया।
- मगध विजय के पश्चात् चन्द्रगुप्त ने समस्त उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की। इसी क्रम में उसने अवन्ति प्रदेश पर भी विजय प्राप्त की और उसे **अवन्ति अधिपति** कहा जाने लगा। यहाँ की प्रान्तीय शासन व्यवस्था सुव्यवस्थित और संगठित थी। इस प्रान्त से चन्द्रगुप्त को बारह हजार पण की आय होती थी।
- जैन ग्रन्थ *रमणचूड़रायचरिय* में उल्लेख है कि चन्द्रगुप्त मौर्य का उज्जैन के राजा महेश्वर के साथ संबंध थे। ग्रन्थ में चर्चा है कि पाटलिपुत्र के एक देवयवन में राजा महेश्वर की अत्यन्त रूपवती पुत्री रत्नमंजरी का चित्र लगा हुआ था जिसे देखकर राजा के आदेश से विश्वास पात्र सैनिक अमरदत्त और मित्रानन्द उज्जैन आकर चतुराई से रत्नमंजरी को घोड़े में बैठा कर पाटलिपुत्र ले गये थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य विस्तार पश्चिमोत्तर सीमा में हिन्दुकुश पर्वत से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक तथा उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक विस्तृत था। इससे स्पष्ट है कि इस साम्राज्य सीमा में मध्यप्रदेश पूर्णतः समाहित था।

अशोक

- तक्षशिला विद्रोह को अशोक द्वारा शांत किए जाने से प्रभावित होकर बिन्दुसार ने अशोक को अवन्ति भेजा। इसका कारण यह भी था कि अवन्ति में विदेशी आक्रमण हो रहे थे, साथ ही स्थानीय विद्रोह की संभावना प्रबल हो गयी थी। अतएव अशोक ने बिना युद्ध किए उज्जयिनी में सत्ता स्थापित कर विद्रोह शांत किया और उज्जयिनी में उत्कर्षपूर्ण विजय प्राप्त की।
- इसकी पुष्टि दिव्यावदान से होती है कि बिन्दुसार के राज्यकाल में अशोक, अवन्ति का प्रान्तीय शासक था तथा उसने उज्जयिनी में 11 वर्ष तक राज्य किया।
- अशोक के अवन्ति आगमन के रास्ते में बेसनगर (विदिशा) पड़ा। यहाँ के प्रधान श्रेष्ठी (सेठ) के यहाँ राजकुमार अशोक रुके। श्रेष्ठी पुत्री देवी से कुमार का परिचय हुआ और दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित हुये। यह देखकर नगर सेठ ने अपनी कन्या का विवाह कुमार अशोक के साथ सम्पन्न कर दिया।
- अशोक और देवी से दो बच्चे महेंद्र व संघमित्रा हुये। अशोक के समय में आयोजित तृतीय बौद्ध संगीति में महेंद्र व संघमित्रा को बौद्ध धर्म में दीक्षित करा दिया गया।
- महेंद्र के उपाध्याय मोग्गलिपुत्र (तिस्स) और प्रव्रज्या देने वाले महादेव स्थविर हुये। संघमित्रा की उपाध्याया धर्मपाला और आचार्या आयुपाला हुई।
- वायुपुराण के अनुसार उज्जैन में अशोक के पुत्र कुणाल ने आठ वर्ष तक राज्य किया। अशोक की मृत्यु पश्चात् वह यहाँ पर प्रान्तीय शासक के रूप में शासन करता रहा। इसके पश्चात् उसका पुत्र सम्प्रति उज्जयिनी का प्रान्तीय शासक हुआ, जो जैन धर्म का अनुयायी था।
- न्याय व्यवस्था के अंतर्गत अशोक ने अपराधियों के दण्ड के लिए उज्जैन में एक नरक-घर (Hell House) बनवाया था जो आज भी विद्यमान है, जिसमें भेरूगढ़ जेल संचालित है।

INDIAN FOREST SERVICE (IFOS) 2023

AIR 01

Ritvika Pandey
Forestry Comprehensive Course

AIR 03

Swastic Yaduvanshi
Forestry Comprehensive Course

AIR 05

Vidyanshu Shekhar Jha
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 06

Rohan Tiwari
Forestry Comprehensive Course

AIR 10

Shashank Bhardwaj
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 14

Ankan Bohra
Forestry Comprehensive Course

AIR 16

Prachi Gupta
Forestry Comprehensive Course

AIR 17

Raj Patoliya
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 23

Vineet Kumar
Forestry Comprehensive Course

AIR 27

Jatin Babu S
Forestry Comprehensive Course

AIR 28

Gaurav Saharan
Test Series

AIR 37

Yash Singhal
Forestry Comprehensive Course

AIR 41

Nitish Pratik
Forestry Comprehensive Course

AIR 50

Vaasanthi P.
Test Series

AIR 54

Sourabh Kumar Jat
Forestry Comprehensive Course

AIR 56

Ekam Singh
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 57

Kunal Mishra
Forestry Comprehensive Course

AIR 58

Atul Tiwari
Forestry Comprehensive Course

AIR 60

Aman Gupta
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 61

Sanket Adhao
Forestry Comprehensive Course

AIR 63

Preeti Yadav
Forestry Comprehensive Course

AIR 65

Nihal Chand
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 66

Shashikumar S. L.
Forestry Comprehensive Course

AIR 67

Dhino Purushothaman
Forestry Comprehensive Course

AIR 68

Diwakar Swaroop
Forestry Comprehensive Course

AIR 72

Rajesh Kumar
Forestry Comprehensive Course

AIR 74

Krishna Chaitanya
Forestry Comprehensive Course

AIR 75

Harveer Singh Jagarwar
Forestry Comprehensive Course

AIR 76

Akash Dhanaji Kadam
Forestry Comprehensive Course

AIR 78

Himanshu Dwivedi
Forestry Comprehensive Course

AIR 80

Sumit Dhayal
Forestry Comprehensive Course

AIR 82

Priyadarshini
Forestry Comprehensive Course + Test Series

64 Out of 147 Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2023

Congratulations

To all our successful candidates in

AIR 01

Kanika Anabh
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 03

Anubhav Singh
Forestry Comprehensive Course

AIR 06

Sanskar Vijay
Forestry Comprehensive Course

AIR 10

Satya Prakash
Test Series

AIR 11

Chada Nikhil Reddy
Forestry Comprehensive Course

AIR 12

Bipul Gupta
Forestry Comprehensive Course

AIR 13

Yeduguri Aiswarya Reddy
Forestry Comprehensive Course

AIR 17

Namratha N
Forestry Comprehensive Course

AIR 18

Divyanshu Pal Nagar
Forestry Comprehensive Course

AIR 21

Akanksha Puwar
Forestry Comprehensive Course

AIR 23

Yogesh Rajoriya
Forestry Comprehensive Course

AIR 25

G Prashanth
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 28

Kanishak Aggarwal
Forestry Comprehensive Course

AIR 29

Shashi Shekhar
Forestry Comprehensive Course

AIR 31

Vinay Budanur
Forestry Comprehensive Course

AIR 33

Shraddhesh Chandra
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 35

Kaore Shreerang Deepak
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 36

Javed Ahmad Khan
Forestry Comprehensive Course

AIR 42

Shruti Chaudhary
Forestry Comprehensive Course

AIR 43

Aravindkumar R
Forestry Comprehensive Course

AIR 44

Kishlay Jha
Forestry Comprehensive Course

AIR 45

Prabhutoshan Mishra
Forestry Comprehensive Course

AIR 48

Abhigyan Khaund
Forestry Comprehensive Course

52 Out of **143** Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2024

Online / Offline Batches

Comprehensive syllabus coverage and detailed analysis of PYQs
- Both online / Offline batches
- 2 years of validity with unlimited access.

Study Material

- PYQs and syllabus-based
- Color printed
- Generous use of visual Graphics
- Align with the latest trends and requirements of the exam

Test Series

Personalized feedback with detailed solutions and suggestions for each candidate, ensuring targeted improvement and success in exams.

Leader In Forest Services

A premier institute specializing in forest service exams, including IFoS, ACF, RFO, and ICFRE / ICAR–(ASRB) ARS/NET Examinations.